'जंगली सुअर' उपन्यास में चित्रित सामंती सोच

पंकज कुमार

पीएच.डी. शोधार्थी (हिंदी), आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

शोध सार:-
सामंती सोच सामंतवाद की मजबूत व्यवस्था को उचित आधार प्रदान करता है। हालांकि सामंतवादी व्यवस्था मुख्य रूप से यूरोपीय देशों की उपज है, किन्तु इसकी जड़ें और शाखाएँ विश्व के अधिकांश लोकतांत्रिक देशों में फैल चुकी हैं। भारतीय ग्रामीण समाज भी इससे अछूता नहीं है। साहित्यकार मधुकर सिंह ने अपने उपन्यास 'जंगली सुअर' में सामंती सोच के सामाजिक व आर्थिक पहलू को उजागर करने की कोशिश की है। इस उपन्यास में दीन-हीन, दलित, असहाय एवं ग्रामीण समाज के हाशिए पर रह रहे सनीचर, रधुनी और गनेसी जैसे लोगों पर हो रहे सामंती अत्याचार को चित्रित किया गया है। उपन्यासकार ने सामंती सोच की मानसिकता से संलिप्त और इससे ताल्लुक रखने वाले रामनाथ भाई और सुकुल जैसे लोगों को जानवरों के समक्ष रखते हुए इसे जंगली सुअर की उपमा दी है। सामंतवाद का यूरोपीय स्वरूप स्पष्ट रूप से वर्तमान भारतीय ग्रामीण समाज में कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं है, किन्तु सामंती प्रवृत्ति और सोच अपने निकृष्टतम रूप में हमारे सामने आज भी सुरसा जैसी राक्षसी के रूप में विकरालतम रूप लिए हुए है। जमीन हड़पने, गरीबों को जानबूझकर सूद पर पैसे लेने को मजबूर करने, सूद में दो के बदले चार लेने तथा औरतों को भोग की वस्तु समझने वाली व्यवस्था आज भी भारतीय समाज की दैनिक गतिविधियों का एक अभिन्न अंग है। इस कार्य को करने वाले लोग वास्तव में सामंत तो नहीं है, लेकिन उनकी मानसिक प्रवृत्ति उन्हें सामंती सोच के समकक्ष रखती है। 'जंगली सुअर' उपन्यास की विभिन्न घटनाएँ इसी सामंती सोच को उजागर करती है।

बीज शब्द:- सामंती प्रवृत्ति, सामंतवाद, सामाजिक एवं आर्थिक पहलू, विलासितापूर्ण जीवन, रूढ़िवादिता, दृष्टिगोचर, निकृष्टतम रूप, भूमि केंद्रित इत्यादि।

मूल आलेख:-
'जंगली सुअर' उपन्यास का खल पात्र रामनाथ भाई गाँव का दबंग और विलासी प्रवृत्ति से परिपूर्ण समाज के रूप में गांव और समाज में प्रतिष्ठित है। वह जानबूझकर गांव के लोगों के दरवाजे पर सेवा के लिए हाजिर रहता था। खासकर

गरीब और दलितों की सेवा को अपना सौभाग्य मानता था, किन्तु वास्तव में उसने बाहर से समाजसेवी का जो चोला पहन रखा था, वह अंदर से उनकी सामंती प्रवृत्ति के लिए एक ढाल का काम करती थी। गाँव के हर गरीब के घर की खबर पल-पल उसके पास पहुँचती रहती थी। जैसे ही उसे पता चलता कि गाँव में किसी गरीब के बूढ़े-माँ बाप की तबियत खराब है, वह तत्काल प्रभाव से वहाँ पहुँचकर उनकी मदद करने लग जाता। जब गाँव में सब-कुछ ठीक-ठाक चलता रहता तो सामंती सोच के धनी रामनाथ को बड़ी हैरानी होती। ''कभी-कभी रधुनी चमार पर उन्हें जोरों का गुस्सा आता है। साले की चिट्ठियाँ बहुत आती हैं, महीने में लगभग दो-तीन। बेटा कलकत्ता में जूते का काम करता है। पता नहीं कहाँ से चंडाल महीने में रधुनी को डेढ़ सौ रुपए जरूर भेज देता है। रामनाथ भाई भी हैरान हैं कि रधुनी चमार को कोई तकलीफ अभी तक नहीं हुई है। भाई जी को उसकी सेवा का मौका ही कहाँ मिला है।''[1]

गरीबों की आर्थिक स्थिति का फायदा उठाना, उसे जानबूझकर सूद पर पैसे देना और फिर गलत तरीके से उसे वसूलना सामंतवादी व्यवस्था की सोच को दर्शाता है। रामनाथ और रधुनी के बीच का यह संवाद सामंती प्रवृत्ति की नीचता को दर्शाता है- ''कोई सेवा रधुनी राम? कैसी सेवा, मालिक, घर में कोई बीमार तो नहीं है? नहीं सरकार। अभी तो परमात्मा की कृपा से कोई बीमार नहीं है? कोई बीमार पड़े तो खबर करना, आ जाऊँगा।''[2] रधुनी नासमझ की तरह रामनाथ का मुँह ताकता रहा। उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। क्योंकि उसकी समझ सामंती मानसिकता से परे थी। वह नहीं जानता था कि इस भलाई के पीछे का मुख्य उद्देश्य गरीबों की जमीनों पर कब्जा करना और गाँव से उन्हें बेदखल करना था। 'जंगली सुअर' उपन्यास में ऐसे अनेकों उदहरण हैं जो समाज के सामंती प्रणाली और उससे उपजे घृणात्मक स्वरूप की ओर सोचने पर हमें मजबूर कर देते हैं। रधुनी के पिता की बीमारी और मृत्यु कर्म संस्कार के लिए रामनाथ भाई ने कुछ रूपए सहायतार्थ दिए थे। इस कर्ज के बदले रामनाथ ने रधुनी को सादे कागज पर अँगूठा लगाने को कहा। अनपढ़ और डरपोक रधुनी ने झट से कागज पर अंगूठा लगा दिया। इस बीच रधुनी का बेटा मनिआर्डर से बार-बार पैसे भेजता रहता जिसे रधुनी समय-समय पर रामनाथ भाई को पहुँचाता रहता। फिर भी मूलधन वहीं का वहीं रहता। रधुनी का कहना था कि उसने कर्ज के सारे पैसे रामनाथ भाई को लौटा दिया है, किन्तु सामंती प्रवृत्ति का लिबास ओढ़े रामनाथ भाई इस बात को मानने को तैयार नहीं था। कथाकार मधुकर सिंह जी रामनाथ भाई के दबंगई का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि ''रधुनी ने उनके सारे कर्ज चुका दिए थे। भाई जी से कागज वापस लेने के लिए उनके दुआर पर बैठा था। उन्होंने उसे फुफकारते हुए कहा रधुनी राम? सूद के पैसे श्मशान घाट से उठकर तुम्हारा बाप चुकाएगा क्या? गनेसी, जुम्मन, जुम्मन केजडा, भरोसी अहीर, सनीचर सिंह, कैलाश राय, जंगी पउदार सबके सब नमक हराम हैं। रोब वक्त पर काम आया, उनकी सेवा की। इस पर बेइमानों पर राजनीति सवार है। गिरधारी सुकुल की बहु भगाकर ले गया रामसिंगार सुकुल। यह इज्जत पानी का मामला है भले पच जाए पर मेरा सूद-दर-सूद किसी ने मारने की कोशिश की तो कच्चा चबा जाऊँगा।''[3]

सनीचर रामनाथ का छोटा भाई है, किन्तु उसका स्वभाव रामनाथ के जैसा नहीं है। सनीचर को भाई जी के नाटक पर हँसी आती है। ''गरीब-दुखिया समझकर गाँव-जवार के लोगों से पूछते रहते हैं- कहो भइया, तुम्हारे यहाँ कोई

मरनेवाला तो नहीं है। किरिया-करम के लिए धन, जन सब कुछ से हाजिर हूँ। मुझे याद करना मत भूलना। किसी की बेटी का ब्याह अगर हुआ तब तो बिना बुलाए ही पहुँच जाएँगे। रात-दिन खटते रहेंगे। भाई जी का ऐसे कामों में बहुत मन लगता है।''[4] 'जंगली सुअर' उपन्यास के एक अन्य घटनाक्रम में गाँव के गरीब और लाचार गनेसी की सेवा करने को रामनाथ भाई तत्पर हैं। वे उसके बीमार बाप की मृत्यु की प्रतीक्षा में हैं। क्योंकि जब उसके बाप की मृत्यु होगी तभी उसके क्रिया-कर्म के लिए सूद पर पैसे लेगा और इसके बदले रामनाथ गनेसी का घर को हड़पेंगे। उसके घर को हड़पने के चक्कर में रामनाथ भाई जानबूझकर गनेसी को सूद के मायाजाल में बाँधने के फिराक में हैं। रामनाथ गनेसी से पूछते हैं कि ''बाप के संबंध में तुम्हारा क्या विचार है? मैं क्या बता सकता हूँ, गनेसी बोला- यह तो परमात्मा के हाथ में है। यह कुछ रुपए अपने पास रख लो। भाई जी ने सौ रुपए गिनकर उसकी तरफ बढ़ा दिए। यह किसलिए, सरकार। गनेसी अचरज से उन्हें देखता रहा। तुम्हारे बाप की दशा मुझसे देखी नहीं जाती। दोनों हालत में रुपए काम आएँगे। अगर दवा कराना चाहो तो खर्च कर सकते हो। अगर मर ही गया तो गंगा-प्रवाह के लिए भी ले जा सकते हो।''[5] कुछ समय बाद गनेसी के पिता की मृत्यु हो जाती है। रामनाथ के दिए पैसे से बाप का अंतिम संस्कार करता है। गनेसी रामनाथ के घिनौने चाल को समझ नहीं पाता है। रामनाथ ने गनेसी को कुल मिलाकर साढ़े सात सौ रुपए दिए थे। इस रुपए को चुकाना गरीब गनेसी के लिए बहुत बड़ी बात थी। उसे क्या पता कि रामनाथ भाई की नजर उसके दस कट्ठा की जमीन पर है। सामंतवादी व्यवस्था मूलतः भूमि केंद्रित होती है। अधिक से अधिक जमीन पर अधिकार करना और उसका बिस्तार करना इसके मूल में है। यही प्रक्रिया रामनाथ भाई द्वारा भी समय-समय पर अपनाया जाता है। जैसे ही गनेसी पिता के श्राद्ध कर्म से निपटा, रामनाथ उसे अपने दुआर पर बुलवाते हैं। श्राद्ध कर्म की बातें पूछते-पूछते अपनी मूल प्रवृत्ति पर रामनाथ आते ही पूछते हैं- ''तब मेरे रुपए कब तक दे रहे हो? एक-दो साल में चुका दूँगा। एक-दो साल तो बहुत दिन होते हैं। इसके सूद भी साढ़े सात सौ के तिगुने हो जाएँगे। सब पाई-पाई चुका दूँगा। गनेसी हाथ जोड़कर बोला। तब तक के लिए उस पार वाली दस कट्ठा जमीन मेरे यहाँ छोड़ क्यों नहीं देते? जो इच्छा हो मालिक, गनेसी बोला ले लीजिए। घबराना नहीं, भाई जी ने उसे धीरज बँधवाया, अब तो दुखिया का खेत-बघार रेहन या बंधक लिखवाना जुर्म है। बिना कागज के मेरे पास छोड़ दो। जब मेरे साढ़े सात सौ रुपए लौटा दोगे, तब मैं भी तुम्हारा दस कट्ठा जमीन वापस कर दूँगा। मंजूर है न?''[6]

सामंती सोच वाला रामनाथ अपने चचेरे भाई सनीचर के साथ भी जमीन और पैसे के मामले में सौतेला व्यवहार करता है। जब सनीचर कमाने कलकत्ता जा रहा था तभी उसने अपनी माँ को समझा दिया था कि रामनाथ भाई के आगे कभी हाथ मत फैलाना। वह गाँव-जवार के लिए धर्मात्मा पुरुष हो सकता है किन्तु गोतिया भाई के लिए तो कसाई से भी बदतर है। जैसे ही सनीचर कलकत्ता से वापिस आया रामनाथ तुरंत हिसाब-किताब करने पहुँच गया। रामनाथ कहता है कि ''यह तो भाग्य मनाओ कि मैंने चाची का परलोक सुधार दिया। इस लोक में तुमने उन्हें बहुत सताया। लेकिन मैंने तो उनका परलोक सुधार दिया। आराम से पंखा डुला रही होंगी। तुम्हारी जायदाद तो मेरी देन के सामने

एकदम थोड़ी है। एक दिन बैठकर हिसाब-किताब कर लो। हाँ मैं इसके लिए बराबर तेयार हूँ कि जब चाहो मेरा कर्ज साफ कर अपनी जमीन और घर वापस ले सकते हो।"[7]

'जंगली सुअर' उपन्यास के आरंभिक बिंदु में ही लेखक ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अभी भी ग्रामीण समाज रूढिवादिता के चंगुल से मुक्त नहीं हो पाया है। रामनाथ, सुकुल जैसी सोच के लोग ग्रामीण समाज में दीमक की तरह मौजूद हैं। सामंती प्रवृत्ति आधुनिकता की घोर विरोधी रही है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि जब सनीचर कलकत्ता से वापस अपने गाँव पत्नी और बच्चों सहित लौटता है तो उसे ग्रामीण समाज में पैठ जमाए सामंती सोच से मुकाबला करना पड़ता है। उसने किसी गैर बिरादरी की महिला से शादी की थी इस कारण समाज इसे मानने को तैयार नहीं था। लोग उसकी पत्नी के बारे में तरह-तरह की बातें बताने फिर रहे हैं। "सनीचरा बंगला देश से मेहरारू लेकर आया है। कोई जात-दुनिया का पता थोड़े है। कोई कहता है बंगालिन है, कोई कहता है मुसलमान। मगर इतना सच जरूर है बाबू साहेब, कि इस देश की और आपकी जात बिरादरी की तो बिल्कुल नहीं है।"[8]

सामंती समाज में औरतों को एक वस्तु माना गया है। औरतों को हर चीज पर पाबंदी है। उसे दुबारा शादी न करने देना और विधवा बनाकर रखना सामंती निकृष्टता को दर्शाता है। सनीचर पर पत्नी छोड़ने का बार-बार दबाव बनाया जाता है। रामनाथ भाई उसे समाज और गाँव की मान मर्यादा की याद दिलाते हैं। "एक सलाह मेरी भी मानो सनीचर, रामनाथ भाई काफी गंभीर मुद्रा बनाकर कहने लगे, औरत जात पैर की जूती होती है। इसे कहीं ले जाकर छोड़ आओ, ताकि गाँव का रास्ता पकड़कर फिर यहीं न चली आए, और लड़कों को अपने पास रस लो। मैं तुम्हारे लिए इतना कर सकता हूँ कि बड़े लड़कों को अपने यहाँ रख सकता हूँ। मेरी गाय भैंस चरा दिया करेगा और दरवाजे पर पड़ा रहेगा।"[9] जब भी कलकत्ता से कोई चिट्ठी आती है, उसकी पत्नी को गाँव वाले शक की नजर से देखते। खासकर सामंती चरित्रवाला सुकुल और रामनाथ। हालांकि सनीचर के घर चिट्ठी उसकी पत्नी की माँ भेजती थी, लेकिन जानबूझकर सनीचर की पत्नी के चरित्र पर उँगली उठाई जाती। सुकुल जी रामनाथ भाई की तरफ चिट्ठी बढ़ाते हुए बोले- "मुझे तो इस औरत के चरित्र पर ही शक है। जरूर, इसके यार की चिट्ठियाँ आती हैं। मेरा शक तो बिल्कुल पक्का है कि लड़के-फड़के भी सनीचर से पैदा नहीं है।"[10] विलासितापूर्ण जीवन और औरतें बदलना सामंती सोच का एक हिस्सा है। रामनाथ की नीचता इस हद तक गिर गई कि अपने चचेरे भाई की पत्नी पर बुरी नजर रखने लगा। एक ओर सनीचर की पत्नी के चरित्र पर शंका की जा रही वहीं दूसरी ओर सनीचर की पत्नी को मुसलमान और गैर मुल्क का कहा जा रहा है। इतना होने पर भी रामनाथ भाई उस पर अपनी गिद्ध दृष्टि रखे हुए हैं। यह पूर्ण रूप से सामंती मानसिकता के लक्षण हैं। "भाई जी का कलेजा धक्-धक् कर रहा था। उसकी जिंदगी में यह सातवाँ अवसर था, जब अपनी दोनों औरतों के बाद फिर किसी औरत पर उसका मन डगमगाया था, वह भी उस बुढ़ौती में छोटे भाई की मेहरारू पर लेकिन यह सब तो कहने की चीज है। विश्वामित्र जैसे ऋषि महात्मा भी मेनका के सामने झुके थे। भाई जी तो संसारी पुरुष हैं।"[11]

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

निष्कर्ष:-

'जंगली सुअर' उपन्यास की विभिन्न घटनाएँ समाज के उस पक्ष को दर्शाती हैं, जो अभी भी सामंती सोच की परंपरा को आगे बढ़ा रहा है। वास्तव में विधवा विवाह को मान्यता नहीं देना, हमेशा दूसरों की औरतों पर नजर टिकाए रखना, दूसरों के जमीन को हड़पना तथा बेवजह असहाय और आर्थिक रूप से उपेक्षित लोगों पर जुल्म करना हमारे समाज की नकारात्मक प्रवृत्ति को दर्शाता है। उपन्यास में चित्रित पात्र और उल्लिखित प्रसंग हमें भारतीय ग्रामीण समाज की यथार्थता पर सोचने के लिए मजबूर करते हैं। इस उपन्यास की घटनाएँ हमें एक दृष्टि प्रदान करती है कि तब तक समरसता और भाई-चारा समाज में नहीं होगी, जब तक सामंती सोच के लोगों का दबदबा कायम रहेगा। आधुनिकता को छोड़कर रूढ़िवादिता को अपनाना भी सामंती मानसिकता की निशानी है। अतः निश्चित तौर पर यह कहा जा सकता है कि 'जंगली सुअर' उपन्यास की कथावस्तु सामंती सोच की मानसिकता की इर्द-गिर्द घूमती नजर आती है।

संदर्भ सूचीः-

1. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर), पृ. 238
2. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर), पृ. 252-253
3. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर), पृ. 298
4. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर), पृ. 246-247
5. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर), पृ. 245-246
6. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर), पृ. 255
7. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर), पृ. 240
8. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर), पृ. 235
9. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर), पृ. 239
10. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर), पृ. 256
11. मधुकर सिंह, समय कथाचक्र (जंगली सुअर),पृ. 278